माँ तेरी याद...

- ब्र.कु. दिलीप राजकुले,शांतिवन

जिन्होंने उनके मुख-मंडल को देखा है, उनसे पूछिये कि वे कुदरत की क्या कमाल थीं ! उनको देख कर तो महा अज्ञानी भी कह उठता था -

'' माँ, ओ माँ ! तेरी ठण्डी छाँ ! तेरी शीतल बाँ !
तेरी हाँ में हाँ, ओ माँ !
तू ले जा चाहे जहाँ, हमें दिखता आसमाँ,
भूल गया जहाँ !
माँ ओ माँ ! ''

किसी ने भी मातेश्वरी को देखा या सुना उनको कुछ ना कुछ अनुभव अवश्य प्राप्त हुआ। मेरे नेत्रों को उन्हें देखने का मौका नहीं मिला परंतु जिन ब्रह्मावत्सों को, दादियों तथा दादाओं को उनके अंग-संग रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उनके कमलमुख से मातेश्वरी की प्रेरणादायी जीवन कहानी सुनने का मौका, हमें भी सौभाग्य से मिला। इससे प्रतीत होता है की ऐसी माँ न हुई है ना होना संभव है।

यहाँ जो भी कुछ पाठकों के लिए लिखा जायेगा, ना ही यह कोई अलंकारिक भाषा है, और ना ही कोई कल्पना, अपितु यह संपूर्ण सत्य और अतीत की मधुर, शक्तिशाली व प्रेरणादायी स्मृतियाँ हैं जो सौभाग्यशाली आत्माओं ने हम सभी के समक्ष रखे हैं। हम सभी की ऐसी मातेश्वरी जिनका नाम राधे था और ओम् मंडली में आकर ओम् राधे होकर मातेश्वरी जगदम्बा हो गया। यह परिवर्तन कुछ ही समय में ऐसा हुआ कि सभी यज्ञ वत्स ही नहीं परंतु उनकी लौकिक माँ रोचा भी राधे नहीं अपितु मम्मा, मातेश्वरी कहने के लिए विवश हो गयी थीं क्योकि वो थीं ही जगत की माँ, मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती। इतना ही नहीं पिताश्री ब्रह्मा बाबा भी ओम् राधे को मम्मा कहकर पुकारते थे। धीरे-धीरे मम्मा, मातेश्वरी के नाम के साथ-साथ उनके शरीर में भी, इस नाम के अनुसार परिवर्तन आ गया था। एक कन्या की जगह सचमुच एक माँ सी दिखने लग गयी थीं। आज भी जब कभी हम उनकी तस्वीर की ओर निहारते हैं तो महसूस होता है कि यही जगत् की माँ शेरावाली , माँ सरस्वती, माँ जगदम्बे हैं।

मम्मा त्रिकालदर्शी, भक्तों की इष्ट थीं

आमतौर पर मम्मा 3.30 बजे तक तैयार होकर कमरे के बाहर आ जाती थीं। एक दिन करीब सवा तीन बजे ही तैयार होकर बाहर आ गयीं, तब जमुना दादी ने उनसे पूछा, ``मम्मा, अभी तो समय हुआ ही नहीं, आप जल्दी क्यों बाहर आ गयीं ?'' मम्मा ने कहा, `` आज एक भक्त मुझसे मिलने आने वाला है, इसलिए मुझे जाने दो।'' मम्मा अभी परदे के अंदर ही थीं, इतने में अमृतसर का एक भाई वहाँ आ पहुँचा। वह अपनी कार से उतरा और तीसरी मंज़िल पर दौड़ कर चढ़ रहा था क्योंकि मम्मा तीसरी मंज़िल पर थीं। वह गीत गा रहा था, ``माँ तेरे दर पर खड़ा हूँ...'', ``जय अम्बे, जगदम्बे काली खप्पर वाली...'' मम्मा ने खड़े होकर उसको दर्शन दिया और कहा, ``बच्चे, तुम भक्त बनके गीत ही गाते रहोगे या बच्चे बन कर माँ से कुछ पाओगे ? माँ ने तो अपने बच्चे को पा लिया, तुम माँ को कब पाओगे ?'' वह माँ-माँ कहते मम्मा के चरणों में गिर पड़ा और आँसू बहाता रहा। फिर मम्मा ने उसको क्लास में बिठाया, ज्ञान समझाया, प्रसाद खिलाया। इस प्रकार मातेश्वरी जी भक्तों को भी सन्तुष्ट करती थीं और उनके आगमन का आभास पहले ही कर लेती थीं।

मम्मा मधुरभाषी और सरल थीं

मम्मा की वाणी इतनी सरल, मधुर और कशिश वाली थी कि उन्हें सुनकर सुनने वालों के विचार ही बदल जाते थे। मम्मा में परखने की शक्ति और निर्णय करने की शक्ति बहुत तेज़ थी। मम्मा परख कर, प्यार देकर समर्पण कर वत्सों को समर्पण करा देती थीं। मम्मा जगत् की भी माँ थीं, उनमें बेहद का प्यार, बेहद की दृष्टि थी। मम्मा में इतनी रुहानियत, मिठास और प्यार था कि कोई भी ब्रह्मावत्स उन्हें किसी भी बात के लिए ना नहीं कह सकते थे।

ऐसी असीम शक्तियों व गुणों की भंडार माँ जगदम्बा का लौकिक जन्म सन् 1919 में अमृतसर में हुआ था। उनके पिता सोने-चांदी का व्यापार करत थे और देशी घी के थोक व्यापारी थे। पिता के देहांत के बाद राधे (मम्मा), अपनी माँ रोचा और छोटी बहन गोपी के साथ हैदराबाद (सिन्ध) में अपनी नानी और मामा के घर रहने लगे। उसी दौरान सन् 1936 में पिताश्री के सत्संग में राधे सफेद फ्रॉक पहनकर आने लगी। डान्स और गायन कला में निपुण राधे सफेद फ्रॉक में ट्वींकल-ट्वींकल लीटल स्टार पर सबका मन हर लेती थी। देखते-देखते ही राधे, ओम् राधे और मम्मा मातेश्वरी बन गयी। 24 जून 1965 को अपने पार्थिव देह और दुनिया से अव्यक्त हो गयीं, लेकिन उनकी यादें , उनके शक्तिशाली प्रकम्पन आज भी किसी को उनकी टेप की हुई वाणी द्वारा या यहाँ मधुबन के वायुमंडल द्वारा अनुभव होता है। ऐसी अमीट छाप छोडने वाली माँ जगदम्बा के स्मृति दिवस पर हम सभी लाखों ब्रह्मावत्सों का शत्-शत् प्रणाम।

फरीदाबाद। हरियाणा के मुख्यमंत्री माननीय मनोहर लाल खट्टर का स्वागत करते हुए ब्र.कु. कौशल्या। साथ हैं केन्द्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर तथा विधायक नगेन्द्र बढ़ाना।

अनूपशहर-उ.प्र.। सेवाकेन्द्र में आने पर बुलंदशहर के सांसद भोला सिंह सूर्यवंशी का स्वागत करते हुए ब्र.कु. मनोज।

दिल्ली-बख्तावरपुर। कार्यक्रम के दौरान शरद चौहान, विधायक,नरेला विधान सभा संसदीय सचिव,राजस्व को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शारदा व ब्र.कु. गीता।

नई दिल्ली-रजौरी गार्डन। ग्रीष्मकालीन रचनात्मक वर्कशॉप `विंग्स ऑफ फ्रीडम-2016' के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. शक्ति व अन्य ब्र.कु. भाई बहनों के साथ वर्कशॉप के प्रतिभागी बच्चे।

समस्तीपुर-बिहार। `किसान सशक्तिकरण महोत्सव' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. राजेन्द्र,हरियाणा, ब्र.कु. अविता, ब्र.कु. अरुणा, ब्र.कु. सरोज,उ.प्र., ब्र.कु. राजू,माउण्ट आबू, डॉ. के.एन. सिंह,डायरेक्टर,एक्सटेंशन एज्युकेशन,राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय,पूसा, डी.के. श्रीवास्तव,एम.डी. सुधा डेयरी एवं ब्र.कु. कृष्ण।

बांसवाड़ा-राज.। नवनिर्मित भवन `प्रभु उपहार' के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. रजनी, ब्र.कु. पूनम, नगर परिषद सभापति मंजू बाला, विधायक धन सिंह रावत व ब्र.कु. रीटा।